17 नवम्बर 2008, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

विवादों में उलझकर चित्त को कलुषित करते रहना मानव जीवन की सबसे बड़ी हार है।

वर्ष : 31, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

इन्दौर की धरातल पर विश्व की अद्वितीय रचना ह्न

ढाई द्वीप जिनायतन का शिलान्यास

इन्दौर : रविवार दिनांक 2 नवम्बर, 08 को प्रात: 6:30 बजे जैन मंदिर गाँधीनगर से जिनेन्द्र शोभायात्रा स्वर्णरथ, पालकी एवं लवाजमें के साथ कार्यक्रम स्थल गोम्मटगिरी की तलहटी में कुन्दकुन्दनगर पहुँची। जहाँ मुम्बई निवासी श्री कैलाशजी छाबड़ा के करकमलों से ध्वजारोहण किया गया।

जिनेन्द्र अभिषेक एवं सामूहिक पूजन के उपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के मार्मिक व्याख्यान हुये। डॉ. भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि जैनधर्म नर से नारायण बनाने वाला दर्शन है। उन्होंने कहा कि यह तीर्थधाम समग्र जैन समाज की एकता को कायम रखने हेतु एक सशक्त केन्द्र का कार्य करेगा। साथ ही उन्होंने पूज्य गुरुदेवश्री को याद करते हुये कहा कि गुरुदेव ने हम सभी को भगवान देखा और भगवान बनने का मार्ग बताया है। उसी मार्ग का प्रचार-प्रसार करने के लिये इस ढाईद्वीप जिनायतन की रचना की जा रही है। इस संकल्प का शिलालेख भी यहाँ रीति-नीति के रूप में लगाया है।

डॉ. भारिल्ल का यह प्रवचन इतना मार्मिक था कि उसीसमय एक भाई ने इस प्रवचन की पाँच हजार सी.डी. वितरित करने की घोषणा की।

प्रवचन के उपरान्त राजकोट से पधारे 40 बाल कलाकारों द्वारा पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे के निर्देशन में अहो ढाई द्वीप नामक सुन्दर नाटिका का भव्य मंचन किया गया।

इसके पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सभा का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर के उपकुलपति श्री एन. के. जैन ने अपनी भावना व्यक्त की कि जैन भूगोल के हिसाब से बनाया जा रहा यह जिनायतन सांस्कृतिक समन्वय का प्रमुख केन्द्र तो बनेगा ही, साथ ही जैन भूगोल पर शोधकर्त्ताओं के लिये विशेष उपयोगी होगा। यहाँ जैन भूगोल संबंधी सभी प्रकार की सामग्री आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उपलब्ध होना चाहिये ह्न ऐसी मेरी भावना है।

विशेष अतिथि के रूप में दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर. के. जैन मुम्बई, दिगम्बर जैन समाज के संरक्षक पद्म श्री बाबूलालजी पाटोदी ने कहा कि यह ढाई-द्वीप की रचना इन्दौर शहर की आन-बान-शान के रूप में विकसित होगी। इससे न केवल गोम्मटगिरी क्षेत्र को बल मिलेगा; अपितु समस्त दिगम्बर जैन समाज में एकता स्थापित होगी। उन्होंने डॉ. भारिल्ल द्वारा प्रदर्शित की गई एकता की भावना की भूरि-भूरि सराहना की तथा कहा कि जिन्हें आचार्यश्री विद्यानन्दजी समयसारका शिखर पुरुष कहते हों, उनकी मैं क्या प्रशंसा करुँ।

सभा में विशेष अतिथि श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई, श्री भरत मोदी इन्दौर, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट आदि के साथ समस्त विद्वत्गण मंचासीन थे ।

सभा के उपरान्त ढाई द्वीप जिनायतन की भूमि का शिलान्यास श्रीमती शोभाबेन रसिकभाई माणिकचंद धारीवाल परिवार पुणे की ओर से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से किया गया। साथ ही स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री कविनभाई मंजुलाबेन पारिख मुम्बई परिवार द्वारा हुआ।

समारोह में उपस्थित पूरे देश-विदेश से पधारे साधर्मियों ने स्वर्ण एवं रजत की प्रतीक स्वरूप ईंटें शिलान्यास में विराजमान की। विशेषता यह रही कि श्री सम्मेद शिखर, श्री गिरनार, कुण्डलपुर, सिद्धवरकूट एवं सोनगढ़ तीर्थ क्षेत्र से लाई गई पवित्र मिट्टी हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री विनयजी झेलावत परिवार एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा कलशों के माध्यम से ले जाकर शिलान्यास स्थल पर डाली गई।

शिलान्यास संबंधी सभी विधि पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने सम्पन्न कराई। **(शेष पृष्ठ - 6 पर...)**

सम्पादकीय –

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु (18)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

'यद्यपि जिनागम में दसलक्षण धर्म का वर्णन मुख्य रूप से मुनिराजों की मुख्यता से ही आया है, तथापि देशविरत श्रावक एवं अविरत सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा को भी उनकी भूमिकानुसार ये होते हैं। उनके उत्तमक्षमा आदि में कषाय के घटने के अनुसार मात्रा में भेद होता है, जाति सबकी एक जैसी होती है।'

कोई कहे कि दश धर्म मुनि के उत्तरगुण क्यों हैं; उत्तर ह्न क्योंकि तीन कषाय के अभाव रूप उत्तम क्षमादि धर्म प्रत्येक मुनिराज के होते ही हैं?

अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण क्रोध के अभाव में उत्तम क्षमा वृद्धिंगत होती जाती है तथा संज्वलन कषाय के अभाव में आत्मा में ही अनन्तकाल तक समा जानेवाले अरहन्त परमात्मा को उत्तमक्षमा की पूर्णता होती है।

१. उत्तम क्षमा धर्म का स्पष्टीकरण करते हुए आचार्य कहते हैं कि ह्न 'क्षमास्वभावी आत्मद्रव्य के आश्रय से आत्मा में जो क्रोध के अभावरूप शांति–स्वरूप स्वभाव पर्याय प्रकट होती है, उसे भी क्षमा कहते हैं।

क्रोध आत्मा का विभाव है और वह क्षमा के अभाव से प्रकट हुआ है। यद्यपि वह संतति की अपेक्षा से अनादि का है, तथापि प्रतिसमय नया–नया उत्पन्न होता है। यद्यपि बात तो यह सत्य है कि क्षमा का अभाव क्रोध है; पर कहा यह जाता है कि क्रोध का अभाव क्षमा है। ऐसा कहने का कारण यह है कि अनादि से यह आत्मा कभी भी क्षमा स्वभावरूप परिणमित नहीं हुआ, क्रोध विकाररूप ही परिणमित हुआ है; और जब भी क्षमा स्वभावरूप परिणमित होता है तो क्रोध का अभाव हो जाता है। अतः क्रोध के अभावपूर्वक क्षमारूप परिणमन देखकर ऐसा कहा कि क्रोध का अभाव क्षमा है।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के अनुसार ह्न

''अज्ञान के कारण जबतक हमें परपदार्थ इष्ट–अनिष्ट प्रतिभासित होते रहेंगे, तबतक क्रोध की उत्पत्ति होती ही रहेगी; किन्तु जब तत्त्वाभ्यास के बल से परपदार्थों में से इष्ट–अनिष्ट बुद्धि समाप्त होगी, तब स्वभावतः क्रोध की उत्पत्ति नहीं होगी।''

तात्पर्य यह है कि ह्न जब हम अपने सुख–दुःख का कारण अपने में खोजेंगे, उनका उत्तरदायी अपने को स्वीकारेंगे, तो फिर हम क्रोध करेंगे किस पर? क्योंकि अपने अच्छे–बुरे और सुख–दुःख का कर्त्ता दूसरों को मानना ही क्रोध की उत्पत्ति का मूल कारण है।

मुनिराज को अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान क्रोध के अभावरूप प्रगट वीतराग परिणति निश्चय उत्तमक्षमा है और बाह्य में क्रोध के कारणभूत निन्दा, गाली आदि के प्रसंगों में भी क्रोधित न होना व्यवहार उत्तमक्षमा है।

यद्यपि द्रव्यलिंगी मंद कषायी मुनि बाह्य परिस्थिति में एकदम शान्त दिखलायी पड़ते हैं; तथापि उनकी शान्ति का आधार भगवान आत्मा के आश्रय से उत्पन्न क्षमाभावरूप वीतरागी परिणति नहीं है; अपितु वे यह विचारते हैं कि 'मैं साधु हुआ हूँ, अतः मुझे शान्त रहना ही चाहिए; शान्त नहीं रहूँगा तो लोग क्या कहेंगे? इस भव में तो बदनामी होगी ही; पापबन्ध होने से परभव भी बिगड़ जाएगा। और यदि अभी शान्त रहूँगा तो प्रशंसा तो होगी ही, पुण्यबंध होने से आगे भी सुख–शान्ति प्राप्त होगी। शास्त्रों में भी मुनिराजों को क्रोध नहीं करने की आज्ञा है।'

इसप्रकार चिन्तवन से वे बाह्य में शान्त दिखते हैं; परन्तु उनके मिथ्यात्वपूर्वक अनन्तानुबन्धी आदि चारों प्रकार का क्रोध विद्यमान होने से सच्ची उत्तमक्षमा सम्भव नहीं है।

२. उत्तममार्दव के स्पष्टीकरण में कहा ह्न यद्यपि आत्मद्रव्य तो मार्दव धर्म स्वभावी ही है, परन्तु जब उस मार्दवस्वभावी आत्मा के आश्रय से आत्मा में जो मान के अभावरूप शान्ति–स्वरूप स्वभाव पर्याय प्रकट होती है तो उसे भी मार्दव कहते हैं। यद्यपि आत्मा मार्दवस्वभावी है तथापि अनादि से ही आत्मा में मार्दव के अभावरूप मानकषायरूप विभाव पर्याय ही प्रकटरूप से विद्यमान है।

मृदुता अर्थात् कोमलता का भाव मार्दव है। सामान्यतया मान कषाय के अभाव को मार्दव कहते हैं। मानकषाय के कारण आत्म स्वभाव में विद्यमान कोमलता का अभाव हो जाता है। विशेषरूप से जाति आदि आठ प्रकार के मद के आवेश से होनेवाले अभिमान अथवा 'मैं परद्रव्य का कुछ भी कर सकता हूँ' ह्न तत्त्वज्ञान के बल से ऐसी मान्यतारूप अहंकारभाव को जड़मूल से उखाड़ देना उत्तम मार्दवधर्म है।

मानी जीव की प्रवृत्ति का चित्रण पंडित टोडरमलजी ने इसप्रकार किया है ह्न

''जब इसके मानकषाय उत्पन्न होती है तब औरों को नीचा व अपने करो ऊँचा दिखाने की इच्छा होती है और उसके अर्थ अनेक उपाय सोचता है। अन्य की निन्दा करता है, अपनी प्रशंसा करता है व अनेक प्रकार से औरों की महिमा मिटाता है, अपनी महिमा करता है। महाकष्ट से जो धनादिक का संग्रह किया उसे विवाहादि कार्यों में खर्च करता है तथा कर्ज लेकर भी खर्चता है। मरने के बाद हमारा यश रहेगा ह्न ऐसा विचार कर अपना मरण करके भी अपनी महिमा बढ़ाता है। यदि कोई अपना सम्मानादिक न करे तो उसे भयादिक दिखाकर दुःख उत्पन्न करके अपना सम्मान कराता है। तथा मान होने पर कोई पूज्य–बड़े हों उनका भी सम्मान नहीं करता, कुछ विचार नहीं रहता। यदि अन्य नीचा और स्वयं ऊँचा दिखाई न दे, तो अपने अन्तरंग में आप बहुत सन्तापवान होता है और अपने अंगों का घात करता है तथा विष आदि से मर जाता है ह्न ऐसी अवस्था मान होने पर होती है।

यद्यपि क्रोध और मान दोनों द्वेषरूप होते हैं, तथापि इनकी प्रकृति में भेद है। जब कोई हमें गाली देता है तो क्रोध आता है, पर जब प्रशंसा करता है तो मान हो जाता है। दुनिया में तो निन्दा और प्रशंसा सुनने को मिलती ही रहती है। अज्ञानी दोनों स्थितियों में कषाय करता है।**(क्रमशः)**

(दिनांक ५ अक्टूबर से १४ अक्टूबर ०८ तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आयोजित ११वें शिक्षण शिविर के अवसर पर ''जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (सेमिनार) में पठित आलेख)

अध्यात्म के क्रियान्वयन में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का योगदान

– डॉ. महेश जैन, सहायक संचालक, लोक शिक्षण मध्यप्रदेश (भोपाल) मो. 09406527501

प्रशासन में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि योजना किसके द्वारा तैयार की गयी, महत्त्वपूर्ण यह है कि उसका क्रियान्वयन किसने किया और क्रियान्वयन की पहुँच का स्तर क्या रहा? ये ही दो बिन्दु किसी योजना की सार्थकता के मापक हैं तथा योजना की सफलता का श्रेय योजना बनाने वाले को नहीं, क्रियान्वयन करने वाले को दिया जाता है। प्रथम दृष्ट्या ऐसे लगता है कि योजना बनाना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, फिर उसका क्रियान्वयन तो कोई भी कर देगा; जबकि स्थिति इसके ठीक विपरीत होती है। लौकिक दृष्टि से विचार करें तो शासन की सैकड़ों योजनाएँ उचित क्रियान्वयन के अभाव में डम्प पड़ी है। डॉ. भारिल्लजी के कार्यों को हमें क्रियान्वयन दृष्टि से देखना होगा।

वर्तमान में देश में शताधिक जैन संस्थाएँ हैं। इनमें अनेक संस्थाएँ ऐसी हैं, जो स्मारक से पहले की हैं; किन्तु उनकी वर्तमान स्थिति क्या है? यह बताने की आवश्यकता नहीं है। हम यह नहीं कह सकते कि किसी भी संस्था के योजना निर्माण में कोई कमी रही हो। उनका विधान और विनियम हमसे भी अच्छा हो सकता है; किन्तु आज जो उनकी दशा और दिशा है, वह केवल और केवल उचित क्रियान्वयन की कमी के कारण है।

यदि प्रत्येक संस्था को एक-एक भारिल्लजी मिल जायें तो सारी संस्थाओं में व्याप्त पतझड़ में बसन्त आ सकता है।

जैन संस्थाओं का इतिहास इस तथ्य का पुख्ता प्रमाण प्रस्तुत करता है कि जितनी भी संस्थाएँ खुली, उन सभी का उद्देश्य लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा देना रहा है; किन्तु डॉ. भारिल्लजी ने उल्टी गंगा बहाने का सफल जतन किया है, **जिसमें धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ लौकिक शिक्षा देने की चुनौती को झेला है** और उसका क्रियान्वयन करके दिखा दिया है।

उसी का यह प्रतिफल है कि **आज विज्ञान मेला के साथ विद्वान मेला भी लगने लगा है।**

आज भी जो जैन संस्थाएँ खुल रही हैं, वे भी अभी डॉ. भारिल्ल के उद्देश्य को यथावत् अपनाने में हिचकी ले रही हैं; भले ही कशीदे कितने ही क्यों न पढ़ रही हों।

मेरा उद्देश्य किसी संस्था विशेष की प्रशंसा अथवा अन्य संस्थाओं की अप्रशंसा करना नहीं है। तात्पर्य केवल इतना है कि क्रियान्वयन को दृष्टि में रखकर योजनाओं की संरचना हो तो बेहतर है। इस तथ्य को डॉ. साहब भी स्वीकारते हैं। जब वे सत्य की खोज पेज १२ पर लिखते हैं ''**घण्टों का उपदेश जिस बात को किसी के गले नहीं उतार सकता, वह बात प्रयोग द्वारा एक क्षण में स्वीकृत हो जाती है।**'' निश्चित ही यह प्रयोग क्रियान्वयन का ही एक रूप है।

डॉ. साहब का अन्य महत्त्वपूर्ण योगदान जो अध्यात्म के क्षेत्र में रहा है, वह है **अध्यात्म के मूल स्वरूप का यथावत रूप में विशद स्पष्टीकरण।** सामान्यतः देखने में यह आया है कि अनेक व्याख्याकारों ने अपने नजरिये एवं जनसामान्य की स्वीकारोक्ति को दृष्टिगत करके प्राच्य ग्रन्थों की व्याख्या की है; किन्तु डॉ. साहब ने प्रतिपाद्य के साथ किसी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं की है। चाहे कोई उनका समर्थन करे चाहे न करे; परन्तु उन्होंने समर्थन को दृष्टि में रखकर तत्त्व का प्रतिपादन कहीं/कभी नहीं किया है।

सत्य के उद्घाटन के संबंध में डॉ. साहब का यह कथन उल्लेखनीय है कि ''**किसी की पूर्व मान्यता का यदि सीधा खण्डन किया जाये तो विवेक उत्पन्न न होकर कषाय ही उत्पन्न होती है। अतः विवेक का कार्य तो यही है कि अपनी बात इसप्रकार रखे कि सुनने वाले के सम्मान को चोट भी न पहुँचे और सत्य उसके सामने आ जाये।**''

अध्यात्म की व्याख्या करते समय डॉ. साहब के द्वारा इन दोनों बिन्दुओं का सफलतापूर्वक पालन किया गया है।

डॉ. साहब द्वारा रचित चिन्तन की गहराईयाँ एक ऐसी कृति है जो व्यावहारिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं को समानान्तर रूप से उद्घाटित करती है। यह रचना स्वतंत्र रचना न होकर २० प्रमुख कृतियों का निचोड़ है। जिसप्रकार आयुर्वेद में या अन्य किसी भी भिषग् में अनेक जड़ी बूटियाँ मिलाकर एक दवा तैयार की जाती है; ठीक उसीप्रकार २० ग्रन्थों का सार तत्त्व ग्रहण करके चिन्तन की गहराईयाँ कृति की रचना की गयी है।

यह कृति इस मायने में तथा ऐसे पाठकों के लिए और भी ज्यादा उपयुक्त है, जो प्रथम दृष्ट्या बिना किसी स्वाध्याय के डॉ. साहब को पक्ष प्रेरित मानते हैं। यदि वे सच्चे मन से केवल एक बार सरसरी निगाह से भी '**चिन्तन की गहराइयाँ**' का अध्ययन कर लेंगे तो अपनी धारणा बदल देंगे।

महान साहित्यकारों के द्वारा जिन उपमानों का वर्णन किया जाता है; कालान्तर में यह मान्यता दृढ़ पायी गयी है कि प्रयोग किये गये प्रतीकों में लेखक के स्वयं का अनुभव प्रकारान्तर से व्यक्त हुआ है। डॉ. साहब द्वारा रचित शोध प्रबन्ध में पंडित टोडरमलजी के लिए जिस रूप में उन्होंने प्रस्तुत किया है, वह उनके स्वयं के जीवन पर भी यथावत लागू होता है। अधोलिखित गद्यखण्ड में पंडितजी या पंडित टोडरमलजी के स्थान पर डॉ. भारिल्ल तथा 'थे' के स्थान पर 'हैं' अंकित कर पढ़ा जाये तो डॉ. साहब के जीवन-दर्शन को हम उनके ही शब्दों में विशद रूप से समझ सकते हैं।

(शेष पृष्ठ - 11 पर)

अहमदाबाद पं

चकल्याणक पत्रिका

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर ने अपने मधुर स्वरों में आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री के जीवन एवं उपकार पर सुन्दर गीत प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर समस्त सभा भाव–विभोर हो गई।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन समाज शासन प्रभावना के ट्रस्टी श्री मुकेश जैन ने ढाई द्वीप जिनायतन परिसर की जानकारी देते हुये बताया कि परिसर में प्रवेश करते ही गुरुदेवश्री के जीवन चरित्र पर एक एनिमेशन फिल्म दिखाई जावेगी। साथ ही पुष्पक विमान में बैठकर गुरुदेवश्री के जीवन संबंधी 14 सजीव झांकियाँ दिखाने की योजना है। **परिसर में 19 फीट ऊँचा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का स्टेच्यू लगाया जावेगा।**

इस प्रसंग पर ढाईद्वीप जिनायतन हेतु भूमि देनेवाले स्व.संतोष बेन धर्मपत्नी डॉ. राजेश जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख डॉ. राजेश जैन का सम्मान शासन प्रभावना ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री प्रवीणभाई बोहरा मुम्बई ने किया।

प्रतिष्ठित होनेवाली सर्वप्रथम प्रतिमा का अनावरण श्री चांदमलजी संघवी परिवार साधनानगर वालों की ओर से किया गया। साथ ही उन्होंने अपनी ओर से एक प्रतिमा विराजमान करने की घोषणा की।

आयोजन के लिये श्री दिगम्बर जैन मारवाड़ी मंदिर शक्कर बाजार, काँच मंदिर, इतवारिया बाजार द्वारा संपूर्ण लवाजमा उपलब्ध कराया गया। संपूर्ण कार्यक्रम हेतु श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र गोम्मटगिरी का अविस्मरणीय सहयोग रहा।

समस्त कार्यक्रम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन एवं सफल संचालन में सम्पन्न हुये।

समारोह में खंडवा, उज्जैन, रतलाम, देवलाली, भिण्ड, राजकोट, गुजरात, हिंगोली आदि क्षेत्रों से बस लेकर हजारों लोग पधारे।

अन्त में शासन प्रभावना ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री भरतभाई शाह ने स्थानीय विद्वान श्री कान्तीकुमारजी पाटनी, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल आदि अनेक विद्वानों सहित सहयोगी एवं कार्यकर्ता श्री राजेन्द्रजी सेठी, मनोजीजी पाटनी, राजेन्द्रजी पहाड़िया आदि का आभार प्रदर्शन किया।

संपूर्ण कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार श्री कल्पेश कुमार जैन पत्रकार द्वारा किये जाने पर शासन प्रभावना ट्रस्ट ने उन्हें सम्मानित किया।

पाठशाला में आँगनबाड़ी

पाठशाला संचालकों को सूचित करते हुये हमें हर्ष हो रहा है कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित वी.वि.पाठशाला के पाठ्यक्रम में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा लिखित जैन नर्सरी, जैन के.जी., जैन जी.के. आदि बाल पुस्तकें भी शामिल कर ली गई हैं। ह्न **प्रबंधक, पाठशाला समिति**

विद्वान की आवश्यकता

जो अंग्रेजी माध्यम से संचालित माध्यमिक विद्यालय एवं रात्रि कालीन पाठशाला का संचालन कर सके। आवास–भोजन की सुविधा, मानदेय योग्यतानुसार। **सम्पर्क ह्न** महेन्द्र जैन (07534–233940), मंत्री महावीर परमागम मंदिर भिण्ड एवं अनिल जैन, संचालक वर्द्धमान विद्या विहार स्कूल भिण्ड।

मुक्त विद्यापीठ ह्न

विशारद द्वितीयवर्ष के छात्रों हेतु...

1. जिन छात्रों ने इस वर्ष (2008–09) की रजिस्ट्रेशन फीस न भेजी हो वे छात्र अपनी फीस तुरंत भेजें।

2. इस वर्ष के कोर्स में निम्न पुस्तके हैं ह्न 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1, 2. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2, 3. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, 4. धर्म के दशलक्षण (डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल)+ भक्तामर प्रवचन।

3. जिन छात्रों के पास ये पुस्तकें न पहुँची हो, वे 50/– का मनी ऑर्डर भेजकर पुस्तकें मंगा सकते हैं।

4. द्वितीयवर्ष वालों का टेस्ट पेपर नवम्बर माह के तृतीय सप्ताह में होगा, जिसमें 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 के पाँच अध्याय, 2. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 के पाँच अध्याय, 3. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका के प्रारंभ के सौ प्रश्न, 4. धर्म के दशलक्षण के छह अध्याय (उत्तम सत्य तक) आयेंगे।

5. फाइनल एग्जाम मार्च माह के अंतिम सप्ताह में होंगे।

पेपर का प्रारूप इसप्रकार होगा ह्न

पाँच परिभाषात्मक प्रश्न, तीन भेद–प्रभेदात्मक प्रश्न, दस अति लघुत्तरात्मक प्रश्न, पाँच लघुत्तरात्मक प्रश्न, तीन दीर्घोत्तरात्मक प्रश्न एवं एक निबंधात्मक प्रश्न।

परीक्षा/अध्ययन हेतु निर्देश ह्न

1. तत्त्वज्ञान पाठमाला में आये हुये पद्यात्मक पाठों में से छन्दपूर्ति व छन्दों का सामान्यार्थ पूछा जायेगा।

2. तत्त्वज्ञान पाठमाला में आये हुये महापुरुषों, आचार्यों का जीवन परिचय का अध्ययन अवश्य करें।

3. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका में से प्रश्न क्रमांक 142 से 145 तक छोड़ कर अध्ययन करें।

4. भक्तामर स्तोत्र का अध्ययन करने हेतु भक्तामर प्रवचन पुस्तक पढ़ें, इसमें पुस्तक की प्रस्तावना का अध्ययन करें।

5. भक्तामर स्तोत्र में से श्लोकों का मात्र भावार्थ ही पूछा जायेगा।

इन्दौर नगर में अपूर्व धर्म प्रभावना

इन्दौर : यहाँ ढाई द्वीप जिनायतन शिलान्यास के पूर्व दिनांक 31 अक्टूबर एवं 1 नवम्बर को दो दिनों में इन्दौर के विविध उपनगरों में देश के शिरोधार्य विद्वानों द्वारा 13 प्रवचनों के माध्यम से अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

यहाँ अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन आदि के प्रवचन हुये।

प्रवचनों के कार्यक्रम श्री मारवाडी मंदिर शक्कर बाजार, श्री महावीर मंदिर राजमोहल्ला, जैन मंदिर नेमिनगर कॉलोनी, श्री महावीर मंदिर गांधीनगर, श्री आदिनाथ जिन मंदिर रामचन्द्र नगर आदि स्थानों पर हुये।

ज्ञातव्य है कि समाज के विशेष आग्रह पर दिनांक 3 नवम्बर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का एक विशेष मार्मिक प्रवचन श्री दिग. जैन पंच बालयती मंदिर साधनानगर में हुआ।

यात्रा एवं मुक्तागिरी शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन **कोटा संभाग** द्वारा आयोजित तीर्थक्षेत्र यात्रा एवं मुक्तागिरी शिविर दिनांक 24 अक्टूबर से 30 अक्टूबर, 2008 तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

यात्रा हेतु स्लीपर बस की व्यवस्था की गई थी। इस यात्रा व शिविर में पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित जयकुमारजी बाँरा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा व ब्र. सत्येन्द्रजी भोपाल का मंगल सानिध्य एवं मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। यात्रा में 144 मुमुक्षु भाइयों ने भाग लिया। विशेष बात यह रही कि बस में भी माइक द्वारा पूजन–पाठ व प्रवचन निरन्तर चलते रहे।

यात्रा के दौरान क्रमश: भोपाल, भोजपुर, समसगढ़, नागपुर, रामटेक, कारंजा, भातकुली तीर्थक्षेत्रों की वंदना की गई। जहाँ पर भोजन व ठहरने की उत्तम व्यवस्था स्थानीय समिति द्वारा की गई तथा मुक्तागिरी में त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन रखा गया। जहाँ विनोदकुमारजी मलकापुर द्वारा भोजन व आवास की बहुत ही सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

सभी लोगों ने अति उत्साह से कार्यक्रमों के माध्यम से धर्म लाभ लिया तथा मुक्त कंठ से कोटा फैडरेशन की खूब सराहना की।

ह्न शिविर संयोजक – चेतन जैन

मंगलायतन में शिविर सम्पन्न

मंगलायतन (अलीगढ़) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक 24 से 28 अक्टूबर तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन और श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन ट्रस्ट अलीगढ़ के सहयोग से आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर का आयोजन किया गया।

दिनांक 24 अक्टूबर को शिविर का उद्घाटन डॉ. पी. के. जैन रुड़की द्वारा श्री बड़जात्याजी के निर्देशन में किया गया। ध्वजारोहण श्री निहालजी जैन जयपुर के करकमलों से हुआ। शिविर में पण्डित विमलदादाजी झांझरी, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित बाबूभाईजी फतेहपुर, पण्डित अरहंतजी झांझरी एवं तीर्थधाम मंगलायतन के विद्वानों के सहयोग से कक्षायें संचालित की गईं।

निर्वाणोत्सव पर श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का भी आयोजन किया गया। शिविर के आयोजनकर्त्ता श्री पारसदासजी खण्डेलवाल रामपुर थे। विधान के समस्त कार्यक्रम बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री एवं पण्डित संजयजी शास्त्री के सहयोग से मंगलार्थियों ने सम्पन्न कराये। शिविर में पंचकल्याणक की झाँकियों का प्रदर्शन किया गया साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

डॉ. भारिल्ल के व्याख्यान

अब जी–जागरण पर

1 दिसम्बर 2008 से प्रतिदिन

प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

यह चैनल केबल के अतिरिक्त डिश टी.वी. पर भी उपलब्ध है।

अहमदाबाद

पंचकल्याणक पत्रिका

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 10

तीसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जरा विचार करो कि कषायों की तीव्रता का कितना दुःख है कि उससे बचने के लिये यह जीव मरण की शरण खोजता है, मरण की शरण में चला जाता है। निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुये पण्डितजी लिखते हैं ह्न

''यहाँ ऐसा विचार आता है कि यदि इन अवस्थाओं में न प्रवर्तें तो क्रोधादिक पीड़ा उत्पन्न करते हैं और इन अवस्थाओं में प्रवर्तें तो मरणपर्यन्त कष्ट होते हैं। वहाँ मरणपर्यन्त कष्ट तो स्वीकार करते हैं, परन्तु क्रोधादिक की पीड़ा सहना स्वीकार नहीं करते। इससे यह निश्चित हुआ कि मरणादिक से भी कषायों की पीड़ा अधिक है।[१]''

इसप्रकार यह जीव कषायभावों से पीड़ित हुआ निरन्तर अनन्त दुःखी होता रहता है।

इसप्रकार यहाँ ज्ञानावरण, दर्शनावरण और मोहनीय कर्म के उदय में होने वाले दुःखों का संक्षेप में वर्णन किया। इसीप्रकार अन्तराय कर्मोदय से दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में होने वाली रुकावट व वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र कर्म के उदय में होने वाले अनुकूल-प्रतिकूल संयोग भी मोहकर्म के सद्भाव में दुःख के ही कारण बनते हैं।

वैसे तो कोई भी संयोग-वियोग सुख-दुःख के कारण नहीं हैं; पर मोह के उदय में महान दुःखदायी हो जाते हैं।

इसप्रकार अब तक यह समझाया गया है कि संसारी जीवों के कर्मोदय की अपेक्षा से मिथ्यादर्शनादि के निमित्त से दुःख ही दुःख पाया जाता है और अब यह समझाते हैं कि पर्याय अपेक्षा से एकेन्द्रियादि जीव चारों गतियों में भ्रमण करते हुए अनन्त दुःख उठा रहे हैं।

एकेन्द्रियादि जीवों के दुःखों का निरूपण करते हुये भी यही बताते हैं कि वे जीव किस अवस्था में किस कर्म के उदय में किसप्रकार के दुःख भोग रहे हैं।

एकेन्द्रियादि जीवों के दुःखों की चर्चा आरंभ करते हुये पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''इस संसार में बहुत काल तो एकेन्द्रिय पर्याय में ही बीतता है। इसलिये अनादि ही से तो नित्यनिगोद में रहना होता है; फिर वहाँ से निकलना ऐसा है कि जैसे भाड़ में भुंजते हुए चने का उचट जाना।

इसप्रकार वहाँ से निकलकर अन्य पर्याय धारण करे तो त्रस में तो बहुत थोड़े ही काल रहता है; एकेन्द्रिय में ही बहुत काल व्यतीत करता है।

वहाँ इतरनिगोद में बहुत काल रहना होता है तथा कितने काल तक पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति में रहना होता है। नित्यनिगोद से निकलकर बाद में त्रस में रहने का उत्कृष्ट काल तो साधिक दो हजार सागर ही है तथा एकेन्द्रिय में रहने का उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परावर्तन मात्र है और पुद्गल परावर्तन का काल ऐसा है कि जिसके अनन्तवें भाग में भी अनन्त सागर होते हैं। इसलिए इस संसारी के मुख्यतः एकेन्द्रिय पर्याय में ही काल व्यतीत होता है।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ-५५

वहाँ एकेन्द्रिय के ज्ञान-दर्शन की शक्ति तो किंचित्मात्र ही रहती है। एक स्पर्शन इन्द्रिय के निमित्त से हुआ मतिज्ञान और उसके निमित्त से हुआ श्रुतज्ञान तथा स्पर्शन इन्द्रियजनित अचक्षुदर्शन ह्न जिनके द्वारा शीत-उष्णादिक को किंचित् जानते-देखते हैं। ज्ञानावरण-दर्शनावरण के तीव्र उदय से इससे अधिक ज्ञान-दर्शन नहीं पाये जाते और विषयों की इच्छा पायी जाती है, जिससे महादुःखी हैं।

तथा दर्शनमोह के उदय से मिथ्यादर्शन होता है; उससे पर्याय का ही अपनेरूप श्रद्धान करते हैं, अन्य विचार करने की शक्ति ही नहीं है।

तथा चारित्रमोह के उदय से तीव्र क्रोधादिक-कषायरूप परिणमित होते हैं; क्योंकि उनके केवली भगवान ने कृष्ण, नील, कापोत ये तीन अशुभ लेश्यायें ही कही हैं और वे तीव्र कषाय होने पर ही होती हैं।

वहाँ कषाय तो बहुत हैं और शक्ति सर्व प्रकार से महाहीन है; इसलिए बहुत दुःखी हो रहे हैं, कुछ उपाय नहीं कर सकते।[१]

तथा ऐसा जानना कि जहाँ कषाय बहुत हो और शक्तिहीन हो, वहाँ बहुत दुःख होता है और ज्यों-ज्यों कषाय कम होती जाये तथा शक्ति बढ़ती जाये त्यों-त्यों दुःख कम होता है। परन्तु एकेन्द्रियों के कषाय बहुत और शक्ति हीन; इसलिये एकेन्द्रिय जीव महादुःखी हैं। उनके दुःख वे ही भोगते हैं और केवली जानते हैं।

जैसे ह्न सन्निपात के रोगी का ज्ञान कम हो जाये और बाह्य शक्ति की हीनता से अपना दुःख प्रगट भी न कर सके, परन्तु वह महादुःखी है; उसीप्रकार एकेन्द्रिय का ज्ञान तो थोड़ा है और बाह्य शक्तिहीनता के कारण अपना दुःख प्रगट भी नहीं कर सकता, परन्तु महादुःखी है।[२]'' **(क्रमशः)**

शिशु आँगनवाड़ी केन्द्र का उद्घाटन

उदयपुर : यहाँ 31 जुलाई, 08 को अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा मुमुक्षु मंडल के तत्त्वावधान में मुखर्जी चौक स्थित चंद्रप्रभ दि. जैन चैत्यालय में जैन शिशु आँगनवाड़ी केन्द्र का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

मुमुक्षु मण्डल फैडरेशन के अध्यक्ष सुरेश भोरावत ने बताया कि फैडरेशन द्वारा भारतवर्ष में सिर्फ उदयपुर में ही सर्वप्रथम यह प्रारम्भ की जा रही है। जिसमें दो वर्ष से पाँच वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का ज्ञान दिया जायेगा। बच्चों को प्रत्येक बुधवार व शनिवार को कक्षाओं के माध्यम से जैनधर्म का प्रारम्भिक ज्ञान दिया जायेगा।

आँगनवाड़ी का उद्घाटन भाजपा शहर जिलाध्यक्ष ताराचंद जैन ने किया। उन्होंने कहा कि फैडरेशन द्वारा जिन शिशुओं को आँगनवाड़ी केन्द्र के माध्यम से जो संस्कार दिये जा रहे हैं, वे ही शिशु समाज के भविष्य हैं।

मुख्यअतिथि पूर्व प्राकृत विभागाध्यक्ष डॉ. उदयचंद जैन थे। अध्यक्षता फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्र शास्त्री ने की। विशिष्ट अतिथि फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद जैन, कुन्दकुन्द कहान शिक्षण समिति के महामंत्री राजमल गोदड़ोत, मुमुक्षु मंडल मंदिर के अध्यक्ष हीरालाल अखावत, फैडरेशन के संगठन मंत्री हेमन्त जैन, फैडरेशन के जिला प्रभारी पण्डित खेमचंद जैन, गायरियावास जैन मंदिर के मंत्री दीपचंद गाँधी थे। अतिथियों का स्वागत श्री हीरालाल अखावत ने किया।

संचालन पाठशाला की संचालिका श्रीमती डॉ. नीलम जैन ने किया।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ-६२-६३ २. वही, पृष्ठ-६३-६४

(पृष्ठ - 3 का शेष ...)

पंडितजी (डॉ. साहब) का सबसे बड़ा प्रदेय यह है कि उन्होंने संस्कृत प्राकृत में निबद्ध आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को भाषा गद्य के माध्यम से व्यक्त किया और **तत्त्वविवेचन में एक नई दृष्टि दी। यह नयापन उनकी क्रान्तिकारी दृष्टि में है।** वे तत्त्वज्ञान को केवल परम्परागत मान्यता एवं शास्त्रीय प्रामाणिकता के संदर्भ में नहीं देखते। तत्त्वज्ञान उनके लिए एक जीवित चिन्तन प्रक्रिया है, जो केवल शास्त्रीय परम्परागत रूढ़ियों का ही खण्डन नहीं करती, अपितु समकालीन प्रचलित चिन्तन रूढ़ियों का भी खण्डन करती है।

उनकी मौलिकता यह है कि जिस तत्त्वज्ञान से लोग रूढ़िवाद का समर्थन करते थे; उसी तत्त्वज्ञान से उन्होंने रूढ़िवाद को काटा। उन्होंने समाज की नहीं, तत्त्वज्ञान की चिन्तन रूढ़ियों का खण्डन किया।

उनकी स्थापना है कि कोई भी तत्त्वचिन्तन तब तक मौलिक नहीं, जब तक अपनी तर्क और अनुभूति पर सिद्ध न कर लिया गया हो। कुल और परम्परा से जो तत्त्वज्ञान को स्वीकार कर लेते है, वह भी सम्यक् नहीं हैं। उनके अनुसार **धर्म परम्परा नहीं, स्वपरीक्षित साधना है।**

पंडित टोडरमल (डॉ. साहब) न केवल टीकाकार ही है, बल्कि आध्यात्म के मौलिक विचारक भी हैं। उनका यह चिन्तन समाज की तत्कालीन परिस्थितियों और बढ़ते हुए आध्यात्मिक शिथिलाचार के संदर्भ में एकदम सटीक हैं। वे यह अच्छी तरह समझते हैं कि बेलाग और मौलिक चिन्तन के भार को पद्य के बजाय गद्य ही वहन कर सकता है।

वे विशुद्ध आत्मवादी विचारक हैं। उन्होंने उन सभी विचारधाराओं और धारणाओं पर तीखा प्रहार किया, जो आध्यात्मिकता के विपरीत है। आचार्य कुन्दकुन्द के समय जो विशुद्ध अध्यात्मवादी आन्दोलन की लहर उठी थी, वे उसके अपने युग के सर्वोत्तम व्याख्याकार हैं।

आध्यात्मिक चिन्तन की ऐसी अनुभूति मूलक सहज लोकाभिव्यक्ति, वह भी गद्य में **पंडितजी** (डॉ. साहब) का बहुत बड़ा प्रदेय है। आध्यात्मिक चिन्तन की अभिव्यक्ति के लिए गद्य का प्रवर्तक, व्यवहार और निश्चय तथा प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन करता, धार्मिक आडंबर और सांप्रदायिक कट्टरताओं की तर्क से धज्जियाँ उड़ा देने वाला निस्पृही और आत्मनिष्ठ गद्यकार इसके पूर्व हिन्दी में नहीं हुआ। उनका गद्य लोकाभिव्यक्ति और आत्माभिव्यक्ति का सुन्दर समन्वय है। दार्शनिक चिन्तन की ऐसी सहज गद्यात्मक अभिव्यक्ति, जिसमें गद्यकार का व्यक्तित्व खुलकर झलक उठे, इसके पूर्व विरल हैं।

पंडित टोडरमल (डॉ. साहब) मुख्यरूप से विशुद्ध आध्यात्मिक विचारक है। विचार उनकी अनुभूति का अंग हैं। लेकिन यह अनुभूति की मौलिकता, उन्हें तर्क से विरत नहीं करती। वे जिस बात का भी विचार करते हैं, तर्क उसकी पहली सीढ़ी है।

समाज में ऐसे विद्वान बहुत मिल जायेंगे, जो शास्त्रों के गूढ़ अर्थ में पारंगत है, पर ऐसे विरले ही मिलेंगे जो शास्त्रों के साथ समाज के मनोविज्ञान में भी पारंगत हों। डॉ. साहब ने शास्त्रों के साथ-साथ समाज को भी बखूबी पढ़ा है, जो उनके इस कथन से ध्वनित होता है :– **''तुम उतावली न करो, मैं सत्य का उद्घाटन भी करूँगा और संगठन भी कायम रखूँगा। मेरे द्वारा न सत्य की कीमत पर संगठन होगा और न संगठन की कीमत पर सत्य ही छोड़ा जायेगा। धर्म के लिए सत्य जरूरी है और समाज के लिए संगठन। अतः धार्मिक समाज का काम है कि वह सत्य का आश्रय ले और संगठन को भी बनाये रखें। विघटन समाज को समाप्त कर देता है और असत्य धर्म को। दोनों की ही सुरक्षा आवश्यक है।''**

आध्यात्मिक क्रियान्वयन के दौरान डॉ. साहब ने ऐसी अनेक विपरीत परिस्थितियों का सामना किया है, जो किसी को भी तोड़ने के लिए पर्याप्त थीं; किन्तु उनके अतुल्य मनोबल के कारण उन्हें अपनी दिशा में आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं पाया।

वे लिखते हैं – ''आरम्भ में जब सत्य का विरोध होता है तो कुछ समय तो ऐसे लगने लगता है कि यह बात अधिक चलेगी नहीं, दब जायेगी। तीव्रतम विरोध के कारण जब सत्य के प्रचार की गतिविधियाँ कुछ दब सी जाती है या कुछ दिनों को बन्द हो जाती हैं तो यह भी लगने लगता है कि यह बात समाप्त हो गयी है। अब इसके उभरने का कोई अवसर नहीं, पर यह सब स्थिति क्षणिक होती है। वस्तुतः होता तो यह है कि दबाने से सत्य अपनी शक्ति और संतुलित तैयारी के साथ तेजी से उभरता है; इसलिए तो कहा जाता है कि विरोध प्रचार की कुंजी है।

वस्तुतः विरोध से होता यह है कि वह बात विरोधियों के माध्यम से उन लोगों तक भी पहुँच जाती है, जिनके पास प्रचारकों के माध्यम से पहुँचना संभव नहीं होता; क्योंकि जहाँ प्रचारकों के प्रवेश व पहुँच नहीं होती, वहाँ विरोधियों की होती है।''

डॉ. साहब का अध्यात्म को एक अन्य महत्वपूर्ण प्रदेय शैली है। अत्यन्त सहज और सरल ढंग से तत्त्व को स्पष्ट करना और जनसमुदाय को हृदयंगम करा देना बहुत आसान नहीं है।

पहले समयसार विद्वानों की चर्चा का ही विषय रहा है। जनसामान्य ने गुरुदेव श्री और डॉ. साहब के आशीष से उसे अपनी दिनचर्या में शामिल कर लिया है और समाज के एक तबके ने उसे पर्याय का रूप बना लिया है। आज यदि घर-घर में समयसार की चर्चा होती है तो उसका संपूर्ण श्रेय डॉ. साहब को ही जाता है।

आज समाज में ५०० विद्यार्थी विद्वान तत्त्वप्रचार में सहयोगी हो रहे हैं तो यह भी डॉ. साहब के आध्यात्मिक क्रियान्वयन का ही एक अंग है। मंदिरों में तथा घरों में नियमित स्वाध्याय की प्रवृत्ति जाग्रत होना, हजारों की संख्या में पाठशालाओं की स्थापना, लाखों की संख्या में जिनवाणी का घर-घर में पहुँचना आदि अनेक ऐसे कार्य है, जिनमें डॉ. साहब की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

उनके द्वारा अध्यात्म के क्षेत्र में किये गये कार्यों का वर्णन करने में हमारी लेखनी सक्षम नहीं है। ●

17 नवम्बर 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

सिद्धचक्र विधान हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

१. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक ६ नवम्बर से १३ नवम्बर, २००८ तक श्री प्रेमचंदजी एवं श्रीमती राजेशजी गुरहा परिवार, रायपुर (छत्तीसगढ़) की ओर से श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य-नियम पूजन के उपरान्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विधान की जयमाला पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विभिन्न विद्वानों के माध्यम से कक्षाओं का लाभ मिला। सायं को जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् छात्र प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से सम्पन्न कराये।

2. ग्वालियर (म. प्र.) : यहाँ अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर मुमुक्षु मंडल द्वारा श्री बाबूलालजी महावीरप्रसादजी की ओर से श्री सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ। उद्घाटन पूरणचंदजी सर्राफ मुरार ने किया।

विधान के समस्त कार्य पण्डित मधुकरजी जलगाँव व पण्डित कांतिजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये। इस प्रसंग पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित लालजीरामजी विदिशा एवं स्थानीय पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित सुनीलजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी, पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री, पण्डित पवनजी शास्त्री एवं पण्डित संभवजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में श्रीमती चेतना जैन एवं श्रीमती मंजू जैन ने कार्यक्रम कराये। ह्न **महेश जैन**

शोक समाचार

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **हैदराबाद** निवासी नयन शाह के पिता**श्री महेन्द्रजी कल्याणभाई शाह** का दिनांक 4 नवम्बर,08 को यात्रा के दौरान सोनगढ़ से लौटते हुये राजकोट में देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 500/- रुपये प्राप्त हुये।

2. **जयपुर निवासी** पण्डित संतोषजी झांझरी के ज्येष्ठ भ्राता **श्री ताराचन्दजी झांझरी** का दिनांक 7 नवम्बर, 08 को 85 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप गहन तत्त्वाभ्यासी थे। विगत 60 वर्षों से प्रतिदिन प्रवचन सुनना आपकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था।

3. **जयपुर निवासी** श्री माणकचन्दजी मुशरफ की सुपुत्री **श्रीमती जयलक्ष्मी रारा (आसाम)** का दिनांक 20 अक्टूबर को शांत परिणामों से निधन हो गया। आप तत्त्वरुचिवान महिला थीं। आपको तत्त्वचर्चा एवं स्वाध्याय की विशेष लगन थी। विगत एक माह से आपको लीवर में कैंसर था। अन्त समय में बहुत शांत परिणामों सहित सब कुछ त्यागकर आपने समाधिपूर्वक देह का त्याग किया। आपकी स्मृति में 200/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त हो ह्न ऐसी भावना है।

राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : पर्व के दौरान दिनांक ७ से ११ नवम्बर, ०८ तक **जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर पंचदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें अनेक विद्वानों ने विचार प्रस्तुत किये।

दिनांक ७ नवम्बर को आयोजित प्रथम सत्र की अध्यक्षता उदयपुर (राज.) से पधारे डॉ. उदयचंद जैन, ८ नवम्बर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शिवसागर त्रिपाठी जयपुर, ९ नवम्बर को तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल अमलाई, १० नवम्बर को चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. गंगाराम गर्ग भरतपुर तथा ११ नवम्बर को पंचम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

संगोष्ठी में डॉ. नेमचंदजी जैन श्री महावीरजी ने **सत्य की खोज का साहित्यिक सत्य**, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन ने **शिक्षा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में डॉ.भारिल्ल का दर्शन**, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई ने **डॉ. भारिल्ल और जैन अध्यात्म**, डॉ. संजयजी जैन दौसा ने **क्रमबद्धपर्याय के परिप्रेक्ष्य में डॉ. भारिल्ल की निबन्ध कला** , पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने **सत्य की खोज की ओपन्यासिक तत्त्वों के आधार पर समीक्षा** विषय पर तथा डॉ. बी. एल. सेठी झुंझुनू, डॉ. कमलेशजी जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन अखिलजी बंसल ने किया तथा आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व जयपुर में आयोजित शिक्षण-शिविर के अवसर पर संगोष्ठी का प्रथम चरण आयोजित किया गया था, जिसमें १३ विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत कर संगोष्ठी को सार्थकता प्रदान की।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

28 नव. से 3 दिस.	अहमदाबाद (चैतन्यधाम)	पंचकल्याणक
7 से 14 दिसम्बर	बुन्देलखण्ड यात्रा	युवा फैडरेशन यात्रा
20 से 26 दिसम्बर	फिनिक्स (यू.एस.ए.)	पंचकल्याणक

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127